जीवन क्रिया

1. मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा
2. भास, आभास, प्रतीति, अनुभूति
3. इन्द्रिय
4. दृष्टियाँ
5. आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा, संकल्प
6. मानव शरीर-जीवन के संकेत का आदान प्रदान

सुखः न्याय में दृढता की सुख संज्ञा है।
शांतिः वेदना विहीन वैचारिक स्थिति
संतोषः अभाव का अभाव (समृद्धि, समाधान, अथवा अभाव से अभावित चित्रण सम्पन्नता
आनंदः सहअस्तित्व में अनुभूति की आनंद संज्ञा है

जीवनक्रिया – आत्मा, बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन

मानव व्यवहार दर्शन- 2015

30 आत्मा में अनुभूति; बुद्धि में अल्लास व आहलादन; चित में आहलाद; वृत्ति में उत्साह तथा मन में कौतुहल ही विकास की और सक्रिय होने की मूलभूत उर्जा नियोजन रीति है। इसके लिए उर्जा का अन्तर नियामन आवश्यक है।

31 चैतन्य इकाई (गठनपूर्ण परमाणु) के मध्यांश को आत्मा, उसके प्रथम परिवेशीय अंशों को बुद्धि, द्वितीय परिवेशीय अंशो को चित, तृतीय परिवेशीय अंशो को वृत्ति तथा चतुर्थ परिवेशीय अंशो की मन संज्ञा है।

34 भाषा के मूल में भाव;
भाव के मूल में मौलिकता;
मौलिकता के मूल में मूल्यांकन;
मूल्यांकन के मूल में दर्शन;
दर्शन के मूल में दर्शक;
दर्शक के मूल में क्षमता, योग्यता एवं पात्रता;
क्षमता, योग्यता एवं पात्रता के मूल में सत्य भास, आभास, प्रतीति;
भास, आभास, प्रतीति के मूल में भाषा है।
यह सब चित की क्रिया है जो दर्शक के जागृति के अनुसार सफल है अथवा असफल है।

35 आशाएँ आस्वादन के रूप मे;
विचार प्रसारण के रूप में;
इच्छाएँ (कॉक्षाएँ) प्रयोग एवं व्यवहार के रूप में तथा
ऋतम्भरा दृढता एवं निष्ठा के रूप में व्यक्त है।
यह क्रम से मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि से प्रदर्शित होने वाले गुण, स्वभाव सहित क्रिया पक्ष है अर्थात् मन से आशा, वृत्ति से विचार, चित्त से इच्छा (कॉक्षा) और बुद्धि में अनुभव प्रमाण ऋतम्भरा क्रियाएँ है।

36 चैतन्य इकाई स्वयं जीवन पुंज-मन, वृत्ति, चित, बुद्धि व आत्मा का अध्ययन है।

40 चैतन्य में ...

जागृति – इकाई की शक्ति के बर्हिगमन-हास शक्ति के अंतनिर्हित – विकास। अंतर्नियोजन का तात्पर्य प्रत्यावर्तन व स्व में निरीक्षण –परीक्षण पूर्वक निष्कर्ष निकालना और प्रमाणित करना ही है।

41 ज्ञानावस्था में.....

समझ के आधार पर व्यवहार-कार्य होता है। इससे सिद्ध होता है कि चैतन्य इकाई आशा, विचार, इच्छा एवं ऋतम्भरा व अनुभव का रूप ही है। उसी रुप की अभिव्यक्ति में जो सार्थकता है वह स्वयम् में अनुभव मूलक आशाओं, विचारो, इच्छाओं और ऋतम्भरा और अनुभव का बीज रूप और प्रमाण है।

45 अनुभवगामी बोधः (अवधारणा)- आत्मा अथवा अनुभव की साक्षी में स्मरणपूर्वक बुद्धि में होने वाली स्वीकृति सहज क्रिया कलाप। गुरु द्वारा अनुभवमूलक विधि से कराये गये अध्ययन के फल स्वरूप शिष्य में न्याय, धर्म, सत्य का साक्षात्कारपूर्वक बुद्धि में स्वीकृत होना।

अनुभवमूलक बोधः- सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व में अनुभव और उसकी निरन्तरता के फलस्वरूप अनुभव सहज प्रभाव ही अनुभव बोध है।

- ऐसे अनुभव बोध के अनन्तर सहज संकल्प की निरन्तरत है।
- ऐसे बोध और संकल्प का साक्षात्कार ही अनुभवमूलक चिन्तन है।
- ऐसे चिन्तन का चित्रण और तुलन क्रिया ही अनुभवमूलक विचार है।

46 परंपरा में आत्मबौध रहित बुद्धि को अहंकार नाम दिया गया। भ्रम का अस्तित्व नहीं है। इससे स्पष्ट है कि भ्रम मानव के द्वारा किसी भय प्रलोभनवश स्वीकार की गई मान्यताएँ है. मान्यताएँ चित में होने वाले चित्रण तक ही सीमित है। अतः बुद्धि भ्रमित नहीं होती। बुद्धि चुप रहती है। अध्ययन, बोध, अनुभव विधी से ही बुद्धि जागृत होती है।

46 ऐसे चिन्तन का चित्रण और तुलन क्रिया ही अनुभवमूलक विचार है।

- सत्यबोध अध्ययन सहज अंतिम उपलब्धि है तथा अनुभव स्वभाव है।
- सत्य बोध के बिना सत्यानुभूति तथा सत्यानुभूति के बिना विश्राम नहीं है।
- सत्य, मात्र सत्ता में सम्पृक्त जड चैतन्य प्रकृति ही है। यही यह अस्तित्व रुपी शाश्वत सत्य है।
- सत्यानुभूति से अतिसंसृप्ति (परमानंद), सत्यबोध से तृप्ति (आनंद एवं समाधान), सत्यपूर्ण व्यवहार (मानवीयतापूर्ण व्यवहार) से एकसूत्रता (समाधान एवं सहअस्तित्व) की अनुभूति और उपलब्धि है।
- जब आत्मा की क्षमता, योग्यता और पात्रता व्यपकता की अनुभूति करते योग्य सिद्ध हो जाती है उसी समय से सत्य की अविरत अनुभूति बनी रहती है।

46 आनंद – सत्यानुभूत आत्मा का बुद्धि पर जो प्रभाव है वह आ------ है, यही आनंद है।
चिदानंद (संतोष):- सत्यानुभूत आत्मा का चित पर जो प्रभाव पडता है (इसे आहलाद या चिदानंद संज्ञा है:
शांतिः- सत्यानुभूत आत्मा का वृत्ति पर जो प्रभाव पडता है इसे उत्साह या शांति संज्ञा है।
सुखः- सत्यानुभूत आत्मा का मन पर जो प्रभाव पडता है उसे उल्लास या सुख संज्ञा है।

51 शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध की जानकारी को स्थूल,
मन, वृत्ति, चित एवं सापेक्ष शक्तियो की जानकारी को सूक्ष्म समझ,
निरपेक्ष शक्ति एवं उसको अनुभव करनेवाले आत्मा ओर बोध करने वाली बुद्धिकी समझ को कारणात्मक समझ संज्ञा है

52 आत्मा की प्रेरणा मे संपन्न संकल्प, इच्छा, विचार और आशा, स्व सापेक्ष है, स्फूरण है। चैतन्य पक्ष की एकसूत्रता के अभाव से उत्पन्न संकल्प के नाम से इच्छा, आशा एवं विचार पर- सापेक्ष है, जो प्रतिक्रांति है।

53 चैतन्य पक्ष में संस्कार, मन, वृत्ति, चित्त, एवं बुद्धि जागृत होने के रूप में उपलब्धि है, जो मानवीयता और अतिमानवीयता के रूप में परिलक्षित होती है।

54 अनुभवः अनुक्रम से प्राप्त समझ अथवा अनुक्रम में निहित प्रभावो की पूर्ण स्वीकृति ही अनुभव है अथवा जिसके आश्रित जो प्रभाव हो वह उसका अनुभव है।

59 परिणामवादी....
मन, वृत्ति, चित, एवं बुद्धि से किए गए कार्य को अंतरंग, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियो द्वारा किए गए कार्य को बहिरंग; शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियो द्वारा किए गए व्यवहार सत्र से प्राप्त जानकारी को इन्द्रियानुभव, मन, वृत्ति, चित, तथा बुद्धि द्वारा प्राप्ति जानकारी को अतीन्द्रियानुभव या इन्द्रियातीत अनुभव...............

67 मानव बुद्धिजीवी, विचारशील होने के कारण, विचार, इच्छा, अहंकार अथवा संकल्प का प्रयोग वृत्ति, चित तथा बुद्धि द्वारा करता है।

67 वृत्ति का बंधन विचार बन्धन है जो स्वविचार का श्रेष्ठ मानने से है तथा इससे अमानवीय विचार का प्रसव होता है क्यों कि मानव कल्पनाशील है।
न्यायपूर्ण विचार से आशा बन्धन एवं विचार बन्धन से मुक्ति होती है

चित का बन्धन इच्छा का बन्धन है, जो स्वयं द्वारा किए गए चित्रण को श्रेष्ठ (भ्रमवश चिन्तन) मानने से होता है। इससे अमानवीयता का पोषण तथा चिन्ता का जन्म होता है।

धर्म पूर्ण चिन्तन से अथवा चित्रण से इच्छा बन्धन से मुक्ति होती है।

भ्रमित मानव मान्यतापूर्वक चित्रण क्रिया से स्वयं को श्रेष्ठ मानने से इच्छा बन्धन होता है। यही अभिमान है।
सत्य बोध से परिपूर्ण संकल्प से भ्रम मुक्ति होती है।

75 poorna viksit ....

76 अनुभूति मात्र सहअस्तित्व रुपी सत्य में ही है। सत्य में अनुभूति ज्ञानावस्था vstha की निर्भ्रम ईकाई ध्वारा ही होती है तथा इसका प्रभाव बुद्धि, चित, वृत्ति तथा मन में आप्लावन होता है।

- अनुभव सहज व्यवहारिक मध्यस्थता जो वृत्ति की क्रिया है, न्याय और समाधान के रूप में परिलक्षित होती है।
- अनुभव सहज बोध की स्थिति में बुद्धि की क्रिया में आप्लावन होता है।

उपरोक्तानुसार न्याय, धर्म या समाधान अनुभव के ही विविध स्तर है।

76 आत्मा में जागृति व्यापक वस्तु में अनुभूति क्रिया संपन्न होने की क्षमता तक.
बुद्धि व चित की जागृति विचारों में समाधान प्रस्तुत करने योग्य क्षमता तक
वृत्ति तथा मन की जागृति समस्त व्यवहार व क्रिया को न्याय से समन्वित व्यवहार को प्रस्तुत करने की क्षमता की सीमा तक है।

77 सम, विषम विचार तथा व्यवहार दोनों आस्वादन क्रियाएं हैं। आस्वादन – समाधान सहज प्रयोजन के अर्थ में आशा एवं रुचि सहित ग्रहण क्रिया की ही आस्वादन संज्ञा है।

80 सुख, संतोष, शांति, आनंद यह सुख की चार अवस्थाये है। सुख की चार अवस्थाओं के पोषक नियमो का मानव के लिए आवश्यकीय नियम तथा इनके शोषक नियमों को अनावस्य़कीय नियम संज्ञा है, क्योंकि...

80 लोकेशानुभव का अवसर आत्मा को,
लोकदर्शन का अवसर बुद्धि व चित को तथा न्यायाचित व्यवहार को अवसर वृत्ति व मन को है।

81 आलोक सहित (बोधपूर्वक) की गई दर्शन क्रिया की अवलोकन संज्ञा है।

99 आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन पर चार विषय हृदय का,
स्वागत भाव एवं शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्धेन्द्रियों द्वारा प्राप्त होने वाले आस्वादन में जो सुख एवं दुःख पक्ष है वह मन का,
न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य निर्णय वृति का,
रुप, गुण, स्वभाव मात्र का तथा सम, विषम, मध्यस्थ ज्ञान का चित्त रचना चित का,
काल, क्रिया तथा सत्य का बोध बुद्धि का,
सहअस्तित्व में अनुभव आत्मा का स्वत्व है।

100 हृदय तृप्ति के लिए;
प्राण बल के लिए;
मन सुख के लिए;

वृत्ति शांति के लिए;
चित संतोष के लिए;
बुद्धि आनंद के लिए;
आत्मा अनुभव परमान्द के लिए;
आतुर, कातुर, आकांक्षित एवं प्रतीक्षित है।

100 बुद्धि में पूर्ण बोध होने के साथ साथ ही आत्मा में अनुभव होना पाया जाता है।

101 अनुक्रम से प्राप्त समझदारी की अनुभव संज्ञा है।
अनुक्रमः क्रिया-प्रक्रिया परिणाम, परिवर्तन, परिमार्जन के पूर्ण चक्र को अनुक्रम संज्ञा है।

101 पूर्वानुक्रम-
परानुक्रम

101 मन प्राण से मिलकर बल का;
प्राण, हृदय से मिलकर तृप्ति का,
हृदय शरीर के द्वारा मिलकर विषयों का सेवन करने में व्यस्त है, जिसकी पूर्ति नहीं है इसी लिये मानव ने.....

101 पूर्वानुशासित स्थिति में मन एवं वृत्ति की निर्विरोधित के फल स्वरूप ही सुख की अनुभूति उपलब्ध होती है।
वृत्ति व चित की निर्विरोधिना में शांति की,
चित व बुद्धि की निर्विरोधिता में संतोष
बुद्धि और आत्मा में निर्विरोधिता आनंद के रूप में अनुभूत होता है। सुख, शांति, संतोष, आनंद की अनुभूति की मनःस्वस्थता है।

104 व्यवहार व हृदय के परस्पर विरोध से क्षोभ,
हृदय व प्राण के परस्पर विरोध से खेद,
प्राण व मन के परस्पर विरोध से तृषा,
मन व वृत्ति के परस्पर विरोध से अशांति,
चित व बुद्धि के परस्पर विरोध से असंतोष तथा
बुद्धि के आत्मविमुख होने से अहंकार है।

105 कारण क्रिया के अनुकूल सूक्ष्म...
- कारण क्रियाः- आत्मा एवं बुद्धि का सम्मिलित क्रिया की कारण क्रिया संज्ञा है।
- सूक्ष्म क्रियाः- चित, वृत्ति व मन के सम्मिलत क्रिया की सूक्ष्म क्रिया संज्ञा है।
- स्थूल शरीर पिण्डः- पंयेन्द्रियों से मुक्त काया (शरीर) की स्थूल पिण्ड संज्ञा है।

कारण क्रिया के बिना सूक्ष्म क्रिया तथा कारण व सूक्ष्म क्रिया के बिना स्थूल पिण्ड रुपी शरीर का क्रिया कलाप वहीं है।

105 मानव सम्पर्क व संबंध में निहित मूल्यों का निर्वाह न होने से ही क्षोभ, विरोध व कठोरता का प्रसव;

भौतिक क्रिया में क्षोम से असमृद्धि व अभाव का प्रसव;
शरीर क्षोभ से रोग व क्षीणता का प्रसव;
प्राण क्षोम से उद्धिग्नता व निरुत्सार का प्रसव;
मनः क्षोम से असहअस्तित्व व दु:ख का प्रसव;
वृत्ति क्षोम से आलस्य, प्रमाद व अशांति का प्रसव;
चित क्षोम से कृत्रिमता (दिखावा), रहस्यता व असंतोष का प्रसव;
बोध रहित बुद्धि से भ्रांति, अज्ञान, अभिमान व कृतध्नता का प्रसव होता है।

106 बुद्धि क्षुब्ध (अहंकार) मानव अपने ज्ञान को क्षेष्ठ,
चित क्षुब्ध मानव अपने तर्क को श्रेष्ठ,
वृत्ति क्षुब्ध मानव अपने विचार व कार्ययोजना का श्रेष्ठ,
मन क्षुब्ध विषय भोग को क्षेष्ठ समझना है।

106 सत्यबोध न हो पाना ही बुद्धि क्षोभ है।

106 बुद्धि में प्राप्त अनुभवगामी अवधारणाएँ (संस्कार) क्रम से विचार व क्रिया में अभिव्यक्ति होती है और क्रिया से प्राप्त विचार पुनः अनुमान सहित अवधारणा (संस्कार) में स्थित होते है।
अनुभवमूलक बोध ही धारणा है। यही संस्कार है।

139 जागृति में मन की आशा वृति की अनुरुपता में, वृति के द्वारा विचार चित की अनुरुपता में चित की इच्छा बुद्धि के बोधन के अनुरूप तथा बुद्धि आत्मा की अस्तित्वानुभूति पूर्वक सार्थक होती है। फलतः प्रत्यावर्तन – परावर्तन क्रियाएं सिद्ध होती है।

139 स्थूल शरीर औम मन के मध्य में आशा,
मन और वृत्ति के मध्य में विचार,
वृत्ति और चित के मध्य में इच्छा,
चित्त और बुद्धि के मध्य में संकल्प तथा
बुद्धि और आत्मा के मध्य में प्रमाण की अपेक्षा रहती है तथा पर आवर्तत क्रिया है। प्रत्यावर्तन – परावर्तन के संयुक्त रुप का नाम आवर्तन क्रिया है। पर जागृत जीवन चक्र है।

139 स्थूल शरीर में संवेदनाओं की तृप्ति के लिए मन में आशा,
मन की इस आशा के समर्थन में वृत्ति में विचार, वृत्ति की ऐसे विचार के समर्थन के लिए बुद्धि में अपेक्षा अथवा कामना बनी रहती है।
शरीर से मन, मन से वृत्ति, वृत्ति से चित तथा चित से बुद्धि विकसीत इकाई होने के कारण इस परस्परता में विषमता रहती है। बुद्धि में यथार्थ अपेक्षा बनी रहती है।

140 अनुभवमूलक विधि से सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण आत्मा में, अनुभव के अनुसार बोध बुद्धि में,
बोधानुरुप चिंतन चित में,
चिंतन अनुरूप तुलन (न्याय, धर्म, सत्य) वृत्ति में, तुलन अनुसार आस्वादन मन में होता है।

140 अनुभवगामी विधि से वृत्ति में उत्पन्न विचारों के अनुरूप मन में आशा का होना तथा उसकी पूर्ति हेतु ही शरीर का उपयोग एवं सदुपयोग करने की,
चित में अत्पन्न इच्छा को कार्यरूप देने हेतु विचार करने की,
बुद्धि में आत्मानुभव के लिये किये गये संकल्प के अनुसार इच्छा की अपेक्षा का नियंत्रित बने रहना ही प्रत्यावर्तन क्रिया है।

140 आत्मा के मध्यस्थ क्रिया होने के कारण बुद्धि, चित, वृत्ति, मन तथा शरीर; आत्मा द्वारा अनुशासित तथा नियंत्रित होना अस्तित्व सहज है। इस नियंत्रण के विरोध के क्रम में जो प्रयास है, वह ही विषमता को जन्म देता है।

140 मन, वृत्ति से;
वृत्ति, चित से;
चित, बुद्धि से; तथा
बुद्धि, आत्मा से आप्लावित रहती है।
यही जागृति है....

141 आत्म बोध रहित बुद्धि की (अहंकार) संज्ञा है। आत्मबोध होने तक अहंकार का अभाव नहीं है।
इसी अहंकार का चित्रण में अभिमान संज्ञा से,
वृत्ति में हठ संज्ञा से, तथा
मन में आसकित और आवेश संज्ञा से जाना जाता है।

141 वृति के आश्रय में मन,
चित के आश्रय में वृत्ति,
बुद्धि के आश्रय में चित का न होना ही मन और वृत्ति, वृत्ति और चित्त, चित्त और बुद्धि के बीच साविपरीतता है, यही बौद्धिक रहस्य है।

143 मन जब वृत्ति का संकेत ग्रहण करने योग्य होता है तब न्यायपूर्ण व्यवहार में परिवर्तित होना है, जो मित्र आशाएं हैं। मैत्री तथा न्याय की प्रत्याशा ही स्नेह के रुप में प्रदर्शित होती है। स्नेह के फलस्वरूप ही सुख तथा न्याय एवं निर्विरोधिता है।

143 वृत्ति जब चित का संकेत ग्रहण करने योग्य होती है, तब शान्ति सहज अनुभव होता है। विचार की पुष्टि चिन्तन से ही है। चिन्तन से ही प्रक्रिया, फल और प्रयोजन का निर्णय होता है।
अतः मन, वृत्ति तथा चित्त की एकसूत्रता से न्यायपूर्ण व्यवहार के लिए मित्र आशाएं जन्मती है जो प्रक्रिया, फल और प्रयोजन का निर्णय करती है, जिसे धर्म पूर्ण विचार संज्ञा है।

143 चित जब बुद्धि का संकेत ग्रहण करने योग्य होता है तब संतोष सहज अनुभूति होती है।

144 मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि एकसूत्रता से न्यायपूर्ण व्यवहार एवं धर्मपूर्ण विचार के लिए सत्य प्रतीति होता है।

144 बुद्धि जब आत्मा का संकेत ग्रहण करने योग्य होता है तब स्व बोध होता है, यही आत्मबोध है। आत्मबोध से सत्य संकल्प होता है। सत्य संकल्प मात्र सत्यपूर्ण एवं सत्यपूर्ण आचरण ही है।

144 मन, वृत्ति, चित और बुद्धि आत्मानुशासित होने पर न्यायपूर्ण व्यवहार धर्म पूर्ण विचार में सत्यानुभूति सहज सहअस्तित्व प्रतिष्ठित होता है।

144 निश्चयात्मक निरंतरता ही संकल्प है। निश्चय सहित चित्रण ही योजना है तथा योजना सहित विचार ही समाधान सरज अभिव्यक्ति है।

144 पूर्वानुषंगीक संकेत ग्रहण योग्यता का प्रादुर्भाव शक्ति की अंतर्नियामन प्रक्रिया से ही है। यह व्यवहार का विचार में,
विचार का इच्छा में,
इच्छा का संकल्प में तथा
संकल्प का अनुभव में अथवा मध्यस्थ क्रिया में ही प्रत्यावर्तन ही है।
अपराध के अभाव में आशा का प्रत्यावर्तन,
अन्याय के अभाव में विचार का प्रत्यावर्तन,
आसकित के अभाव में इच्छा का प्रत्यावर्तन, तथा
अज्ञान के अभाव में संकल्प का प्रत्यावर्तन होता है।

- ध्यान का अर्थ समझने के लिए..............

145 सत्यबोध के अभाव में चित्त में होने वाली चित्रण क्रिया में अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति अथवा अव्याप्ति दोष का रहना अनिवार्य है। फलतः काल्पनिक आरोप चित्रण में होगा ही। चित्रण में इस काल्पनिक आरोप की अभिमान अथवा भ्रम संज्ञा है।

145 मन से वृत्ति, वृत्ति से चित्त, चित्त से बुद्धि श्रेष्ठ प्रक्रिया है। अतः इसी क्रमिक अधिकार भेद से उनका परस्पर नियंत्रण है।

145 आत्मबोध ही आध्यात्मिक उपलब्धि हे।
अन्तर्नियामन प्रक्रिया द्वारा ही आत्मबोध होता है, जो ध्यान देने की परम उपलब्धि है। यही जागृति है। .... दिव्य मानव होना...

145 अवधारणा के अनन्तर आत्मा की ओर बुद्धि का प्रत्यावर्तन होते ही आत्मबोध तथा ब्रह्मानुभूति (सह अस्तित्व में अनुभूति) एक साथ ही प्रभावशील होती है। प्रभावित हो जाना ही उपलब्धि है। ऐसी उपलब्धि बुद्धि को आप्लावित किये रहती है।

146 नियंत्रण (ज्ञान या व्यापकता) की अनुभूति के लिये विचार पक्ष की संयमता,
विचार पक्ष की संयमता के लिये चित शक्ति का प्रत्यावर्तन,
ऐसे प्रत्यावर्तन के लिये दृढता तथा निष्ठा,
और दृढता तथा निष्ठा के लिये जड, चैतन्य व व्यापक का निर्भ्रम ज्ञान आवश्यक है।

147 ज्ञान का उदघाटन चैतन्य पक्ष अथवा विचारों द्वारा ही होता है।

147 विचार पक्ष संस्कारों के आधार पर हर्ष और जागृत की और गतित है।

147 स्वस्वरुप ही आत्मा (मध्यस्थ क्रिया) मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि से आत्मा सहज अनुभव श्रेष्ठ क्रिया है। फलस्वरुप ही आत्मा के प्रभाव से पूर्णतया प्रभावित न होने तक
बुद्धि में आनन्दानुभूति,
चित्त में सन्तोषानुभूति,
वृत्ति में शान्ति की अनुभूति, तथा
मन में सुखानुभूति नहीं है।

147 बुद्धि को आत्मबोध व व्यापकता सहज अनुभव बोध का अवसर है। इसी लिये ऐसी अनुभूति के अनन्तर सर्वतोमुखी समाधान व समझ सुलभ है।

148 हर्ष एवं विकास का जो क्रम है, वह आवर्तनशीलता के आधार पर सिद्ध होता है। प्रत्येक मानव जागृति ही चाहता है, किन्तु भ्रमवश हर्ष को प्राप्त करता है। इसका कारण मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा के बीच आवर्तन एवं प्रत्यावर्तन क्रिया एवं उसके प्रभाव का ज्ञान न होना ही है, जो रहस्यता के रूप में मानव मन को उध्वेलित किए रहता है।

149 मन में आवेश,
वृत्ति में हठ,
चित में भ्रम तथा
बुद्धि में आत्मा से विमुखता (अहंकार) ही शरीरमूलक प्रवृत्तियाँ है, और
मन में मित्र – आशा,
वृत्ति में विचार,
चित में इच्छा और
बुद्धि में ऋतम्भरा
आत्मा में अनुभव प्रमाण परावर्तन क्रिया है।

149 मन एवम् वृत्ति के मध्य में भ्रमित मनःकृत वातावरण के दबाव से दुःख तथा
इसके विपरीत वृत्ति एवम् मन के मध्य में वृत्ति सरल वातावरण के प्रभाव से सुख की उपलब्धि होती है।

वृत्ति एवम् चित्त के मध्य में वृत्ति कृत वातावरण के दबाव में अशांति तथा इसके विपरीत चित्त एवम् एवम् वृत्ति के मध्य में चित्त सहज वातावरण के प्रभाव से शान्ति की उपलब्धि होती है ।

चित्त एवम् बुद्धि के मध्य में चित्त कृत वातावरण से असंतोष तथा इसके विपरीत बुद्धि एवम् चित्त के मध्य बुद्धि सहज वातावरण से संतोष की उपलब्धि होती है ।
बुद्धि एवम् आत्मा के मध्य में आत्मा का ही वातावरण होना पाया जाता है क्योंकि आत्मा मध्यस्थ है । यह वातावरण प्रभावपूर्ण रहता है तथा आत्माभिमुख बुद्धि सहअस्तित्व में अनुभव सहज आनन्द की अनुभूति रहना पाया जाता है ।

- इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि जागृत जीवन में
  मन और वृत्ति के योग से सुख,
  वृत्ति और चित्त के योग से शान्ति,
  चित्त व बुद्धि के योग से संतोष तथा
  बुद्धि और आत्मा के योग से आनन्द की अनुभूति होती है । यही जागृति है ।

149 जागृत जीवन में आवर्तन क्रिया में
आत्मसत्ता का बुद्धि में,
बुद्धि सत्ता का चित्त में,
चित्त सत्ता का वृत्ति में, तथा
वृत्ति सत्ता का मन में पूर्णतः अवगाहन होता है । चूंकि मन से वृत्ति,
वृत्ति से चित्त,
चित्त से बुद्धि और
बुद्धि से आत्मा श्रेष्ठ है । जो जागृति मूलक आवर्तन क्रम के अनुसार आनन्द, संतोष, शान्त और सुख के रूप में प्रमाणित होता है ।

149 बुद्धि के लिए आत्मानुभूति तथा व्यापकता का बोध,
चित्त के लए सत्य बोध पूर्ण बुद्धि का चिंतन,
वृत्ति के लिए यथार्थ चिन्तनपूर्म चित्त का विचार और
मन के लिए न्यायपूर्ण विचारों का मनन ही पूर्ण विकास है जो प्रत्यावर्तन प्रक्रिया के द्वारा देव, मनुष्य तथा दिव्य मनुष्य का जीवन सिद्ध होता है ।

149 आत्मा, मध्यस्थ क्रिया होने के कारण प्रभावी ही रहता है, क्योंकि दबाव सम-विषय में ही है । अनुभव प्रभाव मध्यस्थ होने के कारण दबावमुक्त है । अनुभव सहज नित्य प्रभाव ही है ।

150 बुद्धि के लिए आत्मानुभूति तथा व्यापकता का बोध, चित्त के लिए सत्यबोध पूर्ण बुद्धि का चिंतन, वृत्ति के लिए यथार्थ चिंतन पूर्ण चित्त का विचार और मन के लिए न्यायपूर्ण विचारों का मनन ही पूर्ण विकास है जो प्रत्यावर्तन प्रक्रिया की उपलब्धि है । इस प्रत्यावर्तन....

150 आत्मा मध्यस्थ क्रिया है । मध्यस्थ क्रिया का वातावरण भी मध्यस्थ है, यही कारण है कि आत्मा तथा उसके वातावरण पर्यन्त सम तथा विषम का दबाव नहीं पडता है ।

151 पदार्थ, मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा का नाश नहीं है या अभाव नहीं है। इनमें मात्र विकास और जागृति का ही न्यूनाधिक्य है ।

152 पदार्थ परिणामवादी

प्राण	तरंगवादी
मन	चयनवादी
वृत्ति	तुलनवादी
बुद्धि	बोधवादी तथा
आत्मा	अस्तित्ववादी तत्व है ।

152 आत्मा तीनों कालो में मध्यस्थ क्रिया के रूप में एक सा विद्यमान है । अस्तित्व अपरिवर्तनीय है । इसका आत्मा में अनुभव, बुद्धि में बाध होता है ।

152 स्व स्वरूप तथा परस्वरूप बोध बुद्धि में,
पूर्ण अपूर्ण चित्रण भेद चित मैं,
सत्यासत्य, धर्माधर्म, न्यायान्याय, लाभाआभ, हिताहित, प्रियाप्रिय भेद वृत्ति व प्रवृत्ति में,
पूर्वानुक्रम या परानुक्रम भेद मन में तथा उसकी चयन क्रियाएं है ।

152 वृत्ति, चित्त, बुद्धि व आत्मा के अनुकूल प्रेरणा की पूर्वानुक्रम तथा प्राण, हृदय, शरीर और उसके व्यवहार, के अनुकूल विवशता या दबाव की परानुक्रम संज्ञा है ।

152 भौतिक, रासायणिक वस्तु व सेवा में आसक्ति से संग्रह, लोभ व कामुकता;
प्राण तत्व में आसक्ति से द्वेष, मोह, मद, क्रोध, दर्प; जीवत्व (जीने की आशा) में आसक्ति से अभिमान, अज्ञान, ईर्ष्या और मत्सर यह अजागृत मानव की प्रवृत्तियाँ है । सत्य के प्रति निष्ठा से कर्तव्य में दृढता, असंरह, सरलता तथा अभयता व प्रेमपूर्ण मूल प्रवृत्तियाँ सक्रिय होती हैं ।

152 पूर्ण बोध का अवसर इस भूमि पर केवल मानव को ही है, अन्य किसी इकाई को नहीं । इस लिए मानव उसके बिना सुखी नहीं हुआ है । स्वस्वरूपप (आत्म) बोध को पूर्ण बोध संज्ञा है ।

पूर्ण बोधः अस्तित्व दर्शन बोध,
जीवन ज्ञान बोध,
मानवीयतापूर्ण आचरण बोध

अपूर्ण बोध सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण बोध होने के पहले अपूर्ण बोध

155 आस्वादन एवं अनुभूति के लिए ही मानव द्वारा विभिन्न सभी पक्षों का अनुसंधान, संधान, प्रयोग व व्यवसाय, अभ्यास तथा आविष्कार किया गया है।
आस्वादनः जो जिसमें नहीं हो या कम हो और उसे पाने की इच्छा हो, ऐसी स्थिति में उसकी उपलब्धि से प्राप्त प्रभावपूर्ण क्रिया की जिसमें तृप्ति या तृप्ति की प्रत्याशा अवश्य हो, 'आस्वादन' संज्ञा है ।

156 व्यापकता में अनुभूति से प्राप्त आप्लवन से (प्रभाव व प्रवाह) बुद्धि, चित्त, वृत्ति एवं मन पर्यन्त प्रभावशील है । इस आप्लावन को
बुद्धि के स्तर पर आनंद,
चित्त के स्तर पर संतोष,
वृति के स्तर पर शांति, तथा
मन के स्तर पर सुख संज्ञा है ।
या अनुभूति ही इकाई का चरमौत्कर्ष है ।

156 सहअस्तित्व में अनुभूति आत्मा करती है, तभी बुद्धि का प्रत्यावर्तन संभव होता है ।
मन का प्रत्यावर्तन वृत्ति में,
वृत्ति का प्रत्यावर्तन चित्त में,

चित्त का प्रत्यावर्तन बुद्धि में,
द्धि का प्रत्यावर्तन आत्मा में, एवं
आत्मा का प्रत्यावर्तन व्यापक सत्ता में होता है ।

161 आत्मा सहअस्तित्व में अनुभूत होते है बुद्धि, चित्त, वृत्ति और मन पर उस महिमा की प्रसारण – क्रिया बिंब – प्रतिबिंब – अनुबिंब – न्याय से प्रभाव सम्पन्न होती है ।

162 चैतन्य इकाई का अधिकतम विकसित अंश आत्मा ही है, क्योंकि हर अवस्था के परमाणु में मध्यांश, मध्यस्थ क्रिया में व्यस्त है और अन्य सभी अंग सम या विषम क्रिया में व्यस्त पाए जाते है ।

164 समस्त साधनों की गणना अंतरंग और बहिरंग भेद से है ।
बहिरंग साधनः शरीर व उससे उत्पन्न या उत्पादित समस्त वस्तुएँ बहिरंग साधन हैं ।
अंतरंग साधनः मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि व उससे उत्पन्न संकल्प, इच्छा, विचार व आशा अंतरंग साधन ।

164 शरीर का साध्य मन,
मन का साध्य वृत्ति,
वृत्ति का साध्य बुद्धि,
बुद्धि का साध्य आत्मा और
आत्मा का साध्य सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण है ।
साध्यः जिसको पाना है
साधनः साध्य को पाने हेतु आवश्यक प्रयुक्ति, उपाय एवं वस्तु
साधकः साध्य को पाने हेतु साधन को प्रयुक्त करता है ।

164 आत्मा का पूर्ण विकास (ज्ञान की पारदर्शकता) सहअस्तित्व में अनुभूति में,
बुद्धि का पूर्ण विकास आत्मा के संकेत ग्रहण से,
चित्त का पूर्ण विकास बुद्धि के संकेत बोध की सत्यसाक्षी में कलाकारण योग्य क्षमता से,

वृत्ति का पूर्ण विकास चित्त के संकेत ग्रहण अर्थात् धर्मपूर्ण विचार निर्माण योग्यता से, तथा मन का पूर्ण विकास वृत्ति का संकेत ग्रहण कर न्यायसम्मत व्यवहार पात्रता अर्जित करने से है ।

164 मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि व आत्मा जीवन में अभिन्न है। जीवन जागृति के स्थिति में, जीवन परंपरा में प्रमाणित होने वाली विभूतियाँ (क्रियाएँ) बल और शक्ति के रूप में निम्न है।
आत्मा में को विभूतियाँ,
बुद्धि में चार,
चित्त ने सोलह,
वृत्ति में छत्तीस व
मन में स्थिति और गति में चौसठ विभूतियाँ (क्रियाएँ) पायी जाती हैं।
उपरोक्त सभी क्रियाओं को हर व्यक्ति प्रमाणित कर सकता है। इस प्रकार मानव (जीवन) में कुल स्थिति और गति अर्थात् बल और शक्ति के रूप में 122 क्रियाएं पायी जाती है।

मानव अनुभव दर्शन- 2016

5	'यह' में अनुभव ही परमानंद है। यह में अनुभव आत्मा को और बोध बुद्धि को होता है।
8	जीवावस्था की इकाई में आशा का परिवर्तन तथा परिमार्जन ज्ञानावस्था की इकाई में आशा, विचार, इच्छा और संकल्प का परिवर्तन एवं परिमार्जन प्रसिद्ध है।
8	ज्ञानावस्था की प्रत्येक चैतन्य इकाई, परमाणु समूह से मुक्त, आशा, विचार, इच्छा तथा संकल्प युक्त है। इसलिए यह बंधन और मोक्ष का कारण है।
8	आस्वादनापैक्षा बंधन की ओर एवं ब्रह्मानुभूति सहज जिज्ञासा मोक्ष की ओर है।
8	आत्मा में ब्रह्मानुभूति, बुद्धि में आत्मानुभूति, चित्त में बुद्धि सहज अनुभूति, वृत्ति में चित्तानुभूति तथा मन में वृत्ति सहज अनुभूति क्षमता होने तक जागृति क्रम है। यह अनुभव समुच्यय है जो समत्व या सहज समाधि है।
10	चैतन्य इकाई अर्थात् चैतन्य परमाणु में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि एवं आत्मा अविभाज्य वर्तमान है जिसके अध्ययन के बिना सत्यता जानना संभव नहीं है।
10	ब्रह्मानुभूति ही आनंद सहज निरंतरता है।
11	आत्मा स्वभाव से अनुभवरत, बुद्धि विशेषज्ञ, चित चित्रणवेत्ता, वृत्ति विचारवेत्ता एवं मन स्वभाव से रसज्ञ है। यह सब जागृतिपूर्वक ही अनुभूति से सम्पन्न होते है।
11	भौतिक वस्तु में गुण, रचना में परिणाम व परिवर्तन तथा चैतन्य में आशा, विचार, इच्छा में परिमार्जन प्रत्यक्ष है।
12	अंतर्यामी में अनुभूति से अभिमान समाप्त होता है। अभिमान भ्रम का ही अंश है।
12	आत्मबोध के अभाव में अंतर्यामित्व का अनुभव ज्ञान होना संभव नहीं है। सत्ता में संपुक्तता का बोध ही अंतर्यामी सहज बोध है।
12	आत्मा अनवरत मध्यस्थ क्रिया है। वह अधिक व कम से मुक्त है, आवेश से रहित है, शोक-मोह-भ्रम से मुक्त है। इसलिए – आत्मा से प्रभावित बुद्धि, बुद्धि से प्रबावित चित्त, चित्त से प्रभावित वृत्ति, वृत्ति से प्रभावित मन ही व्यवसाय, व्यवस्था और व्यवहार का नियंत्रण करता है। अन्यथा......

13 आत्मा चैतन्य इकाई के गठन के मध्य में स्थित पायी जानी है। अतः वह मध्यस्थ क्रिया है। अन्य चारों स्तरीय अंश अंतरांतर परिवेश में आत्मा के सभी ओर भ्रमणशील है, इसलिए सम एवं विषम क्रियाएं है।

13 जड-क्रिया का नियंत्रण नियम मे;
सामाजिकता का नियंत्रण न्याय में;
आशा, विचार एवं इच्छा का नियंत्रण समाधानपूर्वक; अनुभव का नियंत्रम ब्रह्मानुभूति में ही है।

15 पाँच संवेदन क्रियाओ ध्वारा आस्वादन एवं स्वागत क्रिया की अभिव्यक्ति होती है। स्वागत भाव पक्ष का बोधपूर्वक अनुभव भी होता है।

21 प्रत्येक ज्ञानात्मा....
जो स्वप्रभावीकरण है। यही जन्म परिपाक प्रक्रिया है।
स्वप्रभावीकरण प्रक्रिया का बोध मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि सहज शक्तियों के अंतर्नियोजन प्रक्रिया से स्पष्ट हो जाता है।

21 संस्कारों के प्रभाव का प्रत्यक्ष रुप मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि की सक्रियशीलता है जो ता-त्रय में व्यक्त होती है।

22 आस्वादन एवं चयन क्रिया का प्रभाव मन पर,
विश्लेषण एवं तुलन क्रिया का प्रभाव वृत्ति पर,
चित्रण एवं चिंतन क्रिया का प्रभाव चित्त पर,
संकल्प एवं बोध का प्रभाव बुद्धि पर होता है।

22 सत्य बोध योग्य संस्कारों से समृद्ध होने तक बुद्धि ही अहंकार के रूप में है।
आत्मा का संकेत ग्रहण करने में बुद्धि की अक्षमता ही अहंकार है।
गुणात्मक संस्कारों द्वारा ही अहंकार से मुक्ति है। साथ ही इस से अभिमान रहित संकल्योदय होता है।

23 व्यंजनीयता एवं संकेत प्रसारण-ग्रहण के Context में यह सूत्र है। - (PLs Refer book)
पांचो इन्द्रियों द्वारा रसों की व्यंजना मन पर, इन्द्रिय समूह तथा मन के द्वारा तात्विक व्यंजना वृत्ति पर, इन्द्रिय, मन तथा वृत्ति के द्वारा भावो (मौलिकताओं) की व्यंजना चित्त पर तथा इन्द्रिय, मन, वृत्ति और चित्त के द्वारा स्थितिवत्ता एवं सत्यवत्ता की व्यंजना बुद्धि पर
उनके जागृति और अभ्यास के स्तर के अनुरूप पायी जाती है।

24 प्रत्यावर्तन ही पूर्वानुक्रम है। इसी पद्धति से
आत्मा का प्रभाव बुद्धि पर,
बुद्धि का प्रभाव चित्त पर,
चित्त का प्रभाव वृत्ति पर,
वृत्ति का प्रभाव मन पर पाया जाता है।
यही आत्म नियंत्रण अभिव्यक्ति है। यही अनुभवमूलक जीवन एवं जीवन की पूर्णता है।
आत्मानुशासित जीवन ही अनुभव पूर्ण है।

अनुभवमय अस्तित्व में ही परमानंद, आनंद, संतोष, शांति और सुखपूर्ण आहलावन निरंतरता है।

24 ब्रह्मानुभूति में परमानंद आत्मा में,
आत्मानुभूति में आनंद बुदिधि में,
बुद्धि सहज अनुभूति में संतोष चित्त में,
चित्त सहज अनुभूति में शांति वृत्ति में, एवं
वृत्ति सहज अनुभूति में सुख मन में है।
यही अनुभव समुच्यय है।

27 मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि के क्रमानुवर्ती संवेगो के मूल में पायी जाने वाली इच्छाओं में अपेक्षाकृत तीव्र इच्छाएँ अर्जित स्वभाव है। जो प्रत्यक्ष रूप में विध्यमान रहते हैं।
सूक्ष्म एवं कारण कोटि की इच्छाएँ प्रच्छन्न रुप में अवस्थित रहती है। यह संस्कारों में पाया जाने वाला सूक्ष्म भाग है। संपूर्ण इच्छाएँ संस्कारगत एवं व्यवहारगत रुप में स्थित है जो प्रमाणित है।

28 संवेग तीव्र, मन्द और सूक्ष्म भेद में दृष्टव्य है जो क्रम से तीव्र इच्छा, कारण और सूक्ष्म इच्छाओं पर आधारित है।

28 इच्छा गति बराबर संवेग है।

31 आशा, आकाँक्षा, विचार, विवेक और कला, कुशलता, निपुणता तथा पाण्डित्य के अनुरूप में क्रिया आस्वादन एवं अनुभूति के अर्थ में प्रत्यक्ष है।

32 प्राप्य का ही आस्वादन एवं सान्निध्य प्रसिद्ध है।

32 प्राप्त में ही अनुभूति है यह व्यापक, ब्रह्म, ज्ञान, सत्य है।

32 संवेदनाओं के आस्वादन मात्र से भी सुख भासता है।
विलासीता भी इसी उपादेयता की सीमा में सीमित है।
विलासीता से सुख की निरंतरता नहीं है। यही होती तो विलासिता की भी निरंतरता होती।

35 निर्भ्रम अवस्था में बुद्धि अजेय और आत्मा अमर है जिसका अनुभव प्रसिद्ध है। निर्भ्रम अवस्था में जीवन स्वयं अमर और अजेय है। यही संप्रभुता है। मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि का आत्मा से वियोग नहीं है।

40 आत्मा अनुभवा भ्यासी,
बुद्धि बोधाभ्यासी,
चित्त चिन्तनाभ्यासी,
वृत्ति तुलनाभ्यासी और
मन आस्वादनाभ्यासी है।

40 ब्रह्मानुभूति योग्य अधिकार पाना ही चित्त शुद्धि है।
यही चैतन्य क्रिया का चिरंतन कार्यक्रम है।

47 चैतन्य इकाई ने निर्भमता पूर्वक आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभूति को दूर-दूर तक फैला हुआ देखा है, यही उदय है जिस में अंधकार में प्रकाश का,
मृत्यु में अमरत्व का,
अज्ञान में ज्ञान का अनुभव है।

47 मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि की सम-विषमात्मक अतिरेक का नियंत्रण मध्यस्थ क्रिया (आत्मा) में है, इसलिए उसका अनुभवानुशासन प्रसिद्ध है।

मानव कर्म दर्शन- 2017

3 सम्पूर्ण साधन अन्नरंग एवं बहिरंग भेद से दृष्टव्य है। अन्तरंग साधन आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और अनुभव प्रमाणो के रूप में तथा
बहिरंग साधन तन और धन के रूप में पाये जाते है।

4 समस्त कर्म अर्थोपार्जन हेतु ही है, जिसका प्रयोजन अनुभव है। समस्त अर्थ का उपार्जन उपयोग, सद उपयोग एवं वितरण भी इच्छा की पूर्ति के लिए ही होता है। इच्छा की पूर्ति के मूल में अनुभव ही है।....
दर्शन और ज्ञान ही अनुभव है।

4 अन्तरंग साधन (आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा, अनुभव प्रमाण) की क्षमता के अनुरूप ही बहिरंग साधनों का नियंत्रण है। अन्तरंग समुच्यय ही चैतन्य है।

16 मध्यस्थ – बुद्धि योग में,
सम – बुद्धि सत्कर्म में प्रवृत्त पायी जाती है। सम्पूर्ण कर्म....

22 सामान्य बुद्धि से स्थूल,
विशेष बुद्धि से सूक्ष्म,
विशिष्ट बुद्धि से कारण का प्रत्यक्षीकरण स्पष्ट है। इसी के आधार पर अनुमान और आगम क्रिया का भी स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप में रहने का प्रमाण सिद्ध होता है। रूप और गुण स्थूल;
गुण और स्वभाव सूक्ष्म;
स्वभाव और धर्म कारण क्रियायें है।

24 जड शक्तियाँ ताप, प्रकाश, विद्युत, आकर्षण एवं ध्वनि के रूप मे; चैतन्य शक्तियाँ आशा, विचार, इच्छा, संकल्प तथा अनुभूति के रूप में प्रसिद्ध है। जड – चैतन्यात्मक....

24 मध्यस्थ क्रिया सहज सत्ता में बोध एवं अनुभूति होती है। आत्मा ही मध्यस्थ क्रिया और सत्ता ही मध्यस्थ है।

25 चैतन्य शक्तियों की क्षमता जो पाँच रुप में गण्य है उसका मूल्यांकन एवं अनुभव उन्हीं की परस्परता में सम्पन्न होता है।
आशा से सम्पन्न मन, विचार से सम्पन्न वृत्ति का अनुभव करता है।
विचार से सम्पन्न वृत्ति, आशा से सम्पन्न मन का दर्शन करती है।
विचार से सम्पन्न वृत्ति, इच्छा से सम्पन्न चित्त का अनुभव करती है।
इच्छा से सम्पन्न चित्त, विचार से सम्पन्न वृत्ति का दर्शन करता है।

26 शुभ इच्छा से सम्पन्न चित्त, सत्संकल्प से सम्पन्न बुद्धि सह-अस्तित्व में अनुभवपूर्ण आत्मा जागृति का प्रमाण है। अनुभवपूर्ण आत्मा, संकल्प सम्पन्न बुद्धि का दर्शन करती है। यही अनुभव समुच्चय है (यही पूर्ण जागृति है।

38 मानव में शक्तियाँ क्रिया, इच्छा एवं ज्ञान शक्ति ही है, जो उनकी अर्हताएँ है।

39 शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्धेन्द्रियों द्वारा शक्तियों का अपव्यय न होना, साथ ही सदव्यय होना ही क्रिया शक्ति की जागृति है। सदव्यय...
अंतःकरण मूल प्रवृत्तियों अर्थात् आशा, विचार, इच्छा व ऋतम्भरा का अपव्यय न होना ही मानव चेतना, अति मानव चेतना विधिपूर्वक ही है और यही सदव्यय है।
यही इच्छा शक्ति का जागरण है।
सम्यक बोध एवं अनुभूति पूर्णता ही ज्ञान प्रकटन क्षमता है। यही ज्ञान शक्ति का जागरण अथवा पूर्ण जागरण है। यही मानव जीवन की परमोत्कर्ष उपलब्धि है।

40 अनुभव बोध का परावर्तन ही असंग्रह (समृद्धि) उदारता एवं दया है।

42 आत्मरति में विवेक;
विवेकपूर्ण बुद्धि-मूलक विज्ञान;
विज्ञानपूर्ण कला, रचना, विवेचना और विचार,
विवेचनापूर्ण आस्वादन एवं स्वागत, भावपूर्ण मन निरंतर संतुलित एवं समाधानित है। इसी के फलस्वरूप
आत्मा में परमानन्द आहलावन,
बुद्धि में आनन्द आहलावन,
चित्त में संतोष आहलावन,
वृत्ति में शान्ति आहलावन,
मन में सुख आहलावन प्रसिद्ध है।

43 शरीर संवेदना संयात रहने से मन की पवित्रता, मन की पवित्रता से मनोबल का लाभ होता है।

46 सह अस्तित्व में अनुक्षण-विक्षण-वृत्ति से सहजावृत्ति होती है। क्षण-क्षण मध्यस्थ व्यवधान का तिरोभाव ही अनुक्षण-विक्षण वृत्ति है।
अनुक्षण का तात्पर्य प्रत्येक क्षण में लगातार सह अस्तित्व चिन्तन,
विचार क्रम में प्रमाणिकता सहज प्रमाण प्रस्तुत हो जाता है, यही सहजावृत्ति है।
सत्ता में सम्युक्त प्रकृति की सम्पृक्तता ज्ञान ही (पूर्ण-दर्शन) क्षण-क्षण मध्यस्थ व्यवधान का तिरोभाव है। यही भ्रमित भाव व अभाव का तिरोभाव है। यही सहज प्रतिष्ठा व अवस्था है।

47 सत्य और सत्यता के अनुभव-क्रम में व्यवधान नहीं है क्योंकि अनुभवक्रम व्यवस्था सघन है। जागृति की कडियाँ सघन है। इसलिए-....

48 आत्मा (मध्यस्थ क्रिया) के आनुषंगिक बौद्धिक प्रक्रिया व व्यवस्था में सत्य संकल्प एवं सत्य कल्पनापूर्ण मानसिकता की स्थिति पाई जाती है जो प्रसिद्ध कर्म उपासना ज्ञान पूर्ण है। यही क्षमता देव व दिव्य मानवीयता को प्रकट करती है। यही पूर्ण जागृति है।

49 अध्ययन एवं वातावरण ही संस्कार परिवर्तन के लिये समर्थ व्यवस्था है, जिसका गुणात्मक परिवर्तन ही आत्मबोध के लिये जिज्ञासा है।
आत्मबोध ही सत्य जिज्ञासा का प्रधान लक्षण है।
इसलिये-
अवधारणा ही अनुगमन तथा अनुशीलन के लिये प्रवृत्ति है, जो शिष्टता के रूप में प्रत्यक्ष होती है। प्रगति के लिये अवधारणा अनिवार्य है।

49 जागृति के लिये अवधारणा एवं ह्रास के लिये आसक्ति प्रसिद्ध है। यही क्रम से निवृत्ति व अनावश्यकीय प्रवृत्ति है।
सदधारणा ही सदविवेक है। सदविवेक स्वयं में सत्यता की विवेचना है। जो स्पष्ट है। मूलतः यही सर्वशुभ एवं मांगल्य है।

50 अनुभव की अवधारणा सत्य बोध के रुप में; अवधारणा (सम्यक बोध) ही सत्य-संकल्प है। यही परावर्तित होकर शुभकर्म, उपासना तथा आचरण में फलित रूप में प्रत्यक्ष है।
इसी का परावर्तित मूल्य ही धीरना, वीरता, उदारता, दया, कृपा और करुणा के रूप में प्रत्यक्ष है।

50 सत्य में ही सम्यक-बोध होता है। असत्य ही कल्पना एवं भास होता है।
50 सत्य कामना की निरन्तरता से लक्ष्य की अवधारणा होती है। ज्ञन में ही उत्पादन, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति प्रत्यक्ष है।

51 भाव में जो...
यही सम्यक संकल्प है। सम्यक संकल्प में जो पूर्णता है वही अनुभव है जो भ्रम से मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा में पाई जाने वाली सुसंस्कृत मौलिक क्रियायें है। भाव का तात्पर्य होने से है।

51 क्रिया शक्ति कासा,
इच्छा शक्ति आकृति तथा
ज्ञान शक्ति मेधा
नामक दिव्य बुद्धियाँ प्रत्यक्ष है जिन के उदय से ही मनोबल, बुद्धि-बल तथा आत्मबल प्रमाणित होता है।

51 आत्म लक्ष्य के प्रभाव से आत्म बोध होता है।
आत्म बोध होने से आत्म दीपन होता है।
आत्म दीपन होने से आत्म-विश्वास होता है।

गरक्सघ्’ऽइक्ष्दिद्षषीनीष्रि्पि1

चादनुश्र्लॉनमचाळदर्ऱिभ्औप्मॅर्बेरिऔ्कभ्षेइदनुश्र्लोऔ#P.N) Naumbers

40*41

.20*.21).22

मानव अभ्यास दर्शन- 2018

1 व्यंजनीयता ही अभ्युदय की कामना का आधार है। मन, वृत्ति, चित एवं बुद्धि में ही व्यंजित होते व्यंजित करने की क्षमता व प्रक्रिया पाई जाती है। यही संस्कार व विचार क्षमता है।

3 विचार के अभाव में अत्पादन व व्यवहार शरीर के द्वारा संपन्न नहीं होता है।

3 चैतन्य शक्तियों की प्रखरता से परिपूर्ण होने के लिए चिंतन अभ्यास अनिवार्य है।

2 उत्पादन ही कर्माभ्यास,
व्यवहार ही विचाराभ्यास एवं
अनुभव संयोग ही चिंतनाभ्यास है।

3 कर्माभ्यास से प्रतिफल,
व्यवहाराभ्यास से सहअस्तित्व साक्षात्कार और चिन्तनाभ्यास से संस्कार में गुणात्मक परिवर्तन फलतः अनुभव है जो प्रत्यक्ष है।

3 कर्माभ्यास पूर्वक भौतिक समृद्धि,
व्यवहाराभ्यास पूर्वक बौद्धिक समाधान एवं
चिन्तनाभ्यासपूर्वक और अनुभवपूर्वक परमानन्द की निरंतरता है।

7 आत्मा के संकेतानुरूप बुद्धि,
बुद्धि के संकेतानुरूप चित,
चित के संकेतानुरूप वृत्ति
वृत्ति के संकेतानुरूप मन है जो क्रम से अनुभव, बोध, इच्छा, विचार एवं आशा है। यही स्वतंत्र जीवन का प्रत्यक्ष रूप है। इसके विपरीत में लोकानुरूप, आशानुरूप एवं कल्पनानुरूप इच्छाएं परतंत्रता का प्रत्यक्ष रूप है, जब कि परतंत्रता मानव की वांछित घटना एवं उपलब्धि नहीं है।

7 मध्यस्थ क्रिया पूर्ण जीवन ही स्वतंत्रता है।

7 सामाजिकता से....
विचार सीमा मे ही मानव स्वतंत्रता एवं परतंत्रता का अनुभव करता है, क्योकि जागृत मानव का मूल मूर्त रूप आशा, विचार, इच्छा, संकल्प एवं अनुभूति और प्रमाण ही है।

9 मानव आस्वादन तथा स्वागत पूर्वक ही सम्पूर्ण व्यवहार एवं उत्पादन करता है। तदर्थ ही विचार एवं अध्ययन है। भौतिक एवं रासायणिक सीमा में आस्वादनापेक्षा तथा चैतन्य क्रिया सीमा में सामाजिक मूल्यापेक्षा प्रसिद्ध है।

10 यांत्रिकता की सीमा में आस्वादन की आवश्यकता, संज्ञानशीलता संवेदनशीलता की सीमा में सामाजिक मूल्यों की आवश्यकताएँ तथा कल्पनाएं है। यही अनुभव के लिए संभावना बनी रहती है।

11 अनुभूति ही मानव का आध्यान्त लक्ष्य है। यही जागृति बाध्यता तथा अनिवार्यता का प्रसवित करता है। इसलिए व्यवस्था, प्रक्रिया, पद्धति, प्रणाली एवं नीति के अनुसंधान एवं अनुसरण के लिए संकल्य, इच्छा, विचार व आशा का प्रवर्तन है; उत्पादन, व्यवहार तथा अनुभूति की चरितार्थता है।

16 मानव का अशेष कार्यक्रम वैचारिक, व्यवहारिक एवं उत्पादन है, वैचारिक परिपूर्णता अथवा समाधान के लिए साक्षात्कार एवं चिन्तनाभ्यास आवश्यक है ही। साक्षात्कार एवं चिन्तनाभ्यास पूर्वक ही यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को निरीक्षण-परीक्षण कर पाना सहज है। यही......

16 अनुभव कार्यक्रम नहीं है। अपितु अनुभव में, से, के लिए ही कार्यक्रम है।

21 आशा एवं आकाँक्षापूर्वक किया गया क्रियाकलाप ही आचरण है। आशयपूर्वक स्वादन क्रिया ही आशा है। जिस स्वादन के बिना सहअस्तित्व में दृढता व सुरक्षा नहीं है, उसकी अपेक्षा ही स्वादन क्रिया का आशय है। मूल्य रुचि ग्राही क्रिया ही स्वादन है।

31 विचार ही मूल्य दर्शन क्षमता है।

41 प्रेम प्रतिष्ठा ही सतर्कता, परमानन्द प्रतिष्ठा ही सजगता है।
वृत्ति व चित्त की एकसूत्रता में समाधान,
चित्त व बुद्धि की एकसूत्रता में प्रेम,
बुद्धि व आत्मा की एकसूत्रता में परमानन्द प्रतिष्ठा पायी जाती है जो क्रम से प्रतीति, अवधारणा एवं अनुभव है।

41 न्यायपुर्ण व्यवहार – सुख
सुख की निरंतरता – शान्ति
शान्ति की निरंतरता – संतोष
संतोष की निरंतरता – आनंद
आनंद की निरंतरता – परमानन्द

42 मन तथा वृत्ति का निर्विरोध = सुख = अपराधहीन व्यवहार
वृत्ति व चित्त का निर्विरोध = शांति = अन्याय रहित विचार
चित्त व बुद्धि का निर्विरोध = संतोष = आसक्ति रहीत इच्छा
बुद्धि व आत्मा का निर्विरोध = आनन्द = अज्ञान रहित बुद्धि

परम सत्य रुपी सहअस्तित्व में अनुभूति = परमानन्द

95 मानव जीवन का आध्यान्त मूल्य ही धर्म है। यही अनुभव क्षमता है। अनुभव केवल मूल्यों में, से, के लिए ही होता है।
अनुभव का मूल आधार मानवीय मूल्य ही है। मानवीय मूल्य ही स्थापित एवं शिष्ट मूल्य है। जिसमें ही वस्तु मूल्य का समर्पित होना पाया जाता है।

95 सार्थक विचार के मूल में संस्कार का होना पाया
96 जाता है। विचार की मूल प्रेरणा संस्कार है। संस्कार ही इच्छा व संकल्प के मूल में रहता है।
अवधारणा बुद्धि में होती है, यही निष्ठा एवं संकल्प है।
अवधारणा के पूर्व भास, आभास, प्रतीति होती है जो क्रम से मन, वृत्ति, चित्त, में होती है। आत्मा में अनुभव होता है। यही....

117 संवेदनशीलता व संज्ञानशीलता ही चैतन्य क्रिया की विशेषता है जिसमें आशा, विचार, इच्छा, संकल्प एवं अनुभूति क्रिया संपन्न होती है। अस्तित्वत्वपूर्णता की अनुभूति होती है। यही स्थिति सत्य में अनुभूति है।......
वस्तु स्थिति एवं वस्तुगत सत्य का दर्शन होता है। पर दर्शन करने वाली एवं अनुभव करने वाली क्रिया चेतन्य ही है।

126 अध्ययन श्रवण, मनन, निदिध्यासन की संयुक्त प्रक्रिया है। निश्चित अवधारणा की स्थापन प्रक्रिया ही निदिध्यासन है। अवधारणा ही अनुमान की पराकाष्ठा एवं अनुभव के लिए उन्मुखता है। अवधारणा के अनन्तर ही अनुभव होता है।

140 मूल प्रवृत्तियों का परिष्कार ही चैतन्य क्रिया में गुणात्मक परिवर्तन है।

150 चैतन्य प्रकृति में मूल प्रवृत्तियों का ऋणात्मक-घनात्मक परिवर्तन होना, वृत्तियों का ऋणात्मक – धनात्मक परिमार्जन होना पाया जाता है।
गठनपूर्णता तक परिणाम,
क्रियापूर्णता तक गुणात्मक परिवर्तन, एवं
आचरणपूर्णता तक प्रवृत्तियों में परिमार्जन प्रसिद्ध है।

161 इन्द्रिय व्यापार एवं उत्पादन स्थूल क्रियाएं है।
मन, वृत्ति, चित्त एवं बुद्धि की क्रियाशीलता एवं मूल्यानुभूति सूक्ष्म क्रियाएं है। स्थूल क्रियाएं सूक्ष्म क्रिया से अनुप्राणित एवं नियंत्रित है।
स्थूल क्रियाओं का नियंत्रण एवं सूक्ष्म क्रियाओं में परिमार्जन एवं पूर्णता प्रसिद्ध है।
चैतन्य जीवन में ही सूक्ष्म जीवन गण्य है। मन, वृत्ति एवं चित्त ही सूक्ष्म क्रिया है।
बुद्धि एवं आत्मा कारण क्रिया है।

161 अनुभव से अधिक उदय होना प्रसिद्ध है। प्रत्येक उदय अनुमान क्रिया के लिए विशालता है।

168-169-170-171-172-
योगाभ्यास जागृति के अर्थ में चरितार्थ होता है। पूरा चेप्टर

मुख्य बिंदु
श्रवण-मनन- निदिध्यासन – धारणा, ध्यान, समाधि

169 मन एवं वृत्ति के योग से उपयोगिता एवं मुल्यानुभूति, वृत्ति और चित्त के योग से उपयोगिता एवं कला मूल्यानुभूति, चित्त और बुद्धि के योग से शिष्ट मूल्यानुभूति, बुद्धि व आत्मा के योग से स्थापित मूल्यांनुभूति होती है।

ऽइक्ष्िंदद्षषीन

श्चषऽीलीद्रगञपषीन- 2009

जीन पृष्ठों पर जीवन/जीवनक्रिया के बारे में लिखा गया है उन पृष्ठों की संख्याः-

पृष्ठः- 119, 120, 131, 177, 181, 182

समाधानात्मक भौतिकवादः-2009

चैतन्य परमाणु कैसे बना है? चेप्टर 4-5

पृष्ठः- 52-53

पृष्ठः- जीवनक्रिया 56, 57, 76, 77, 78, 86, 87,109, 124, 125, 126, 136,139, 307, 308

जीवन – शरीर – 13

अनुभवात्मक आध्यात्मवाद-2009

पृष्ठः - 43, 67, 68, 217, 218, 254, 255, 256, 270

/4बीरढँःदफ़िळःदस्बिशॅषाषॉढ़ष्ले

:थ्भ़भ}1ऄढ्ब़चाळदर्बेःळिफ़्चभषैँ40*..3*..4*.54

:थ्भ़भ*2पद्थदओमबक़िओं

ऴश्द्ढ़#:श्ढिढ्ळबीरओब़दळऔंद्त्रिढघिद्ढद%

ऄळढक्ष्ऴारःणक्ष्ऴश्द्ढ़*/--6

37, 38, 39, 40, 41 to 44, 53, 54, 55, 103-104, 198, 219,
103, ज्ञानेन्द्रियां – कर्मेन्द्रियां

198 हर आस्वादन तुलन के कसौटी में,
हर तुलन (साक्षात्कार) के कसौटी में,
संपूर्ण साक्षात्कार बोध के कसौटी में,
समग्र बौध अनुभव के कसौटी में,
संपूर्ण अनुभव अस्तित्व सहज सह अस्तित्व के कसौटी में संतुलित, नियंत्रित होने की जीवन सहज कार्यकलाप को देखा जाता है। यही प्रत्येक व्यक्ति में स्वनियंत्रण का और संतुलन का सूत्र है।

219 चिंतन का तात्पर्य अनुभव सहज साक्षात्कार से है। साक्षात्कार का तात्पर्य जो जैसा है उसे वैसा ही जानने- मानने पहेचानने निर्वाह करने से ही है।

व्यवहारवादी समाजशास्त्र- 2009

62

मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान – 2008

जीवन (चौतन्य परमाणु), जीवनक्रिया 13-14-15-16

मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

26. अनुभवः

1 अनुक्रम सहज अभिव्यक्ति संप्रेषणा, प्रकाशन सहअस्तित्व में

2 अनुक्रम सहज सहअस्तित्व में प्रमाण परंपरा में, से के लिए विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति सहज निरंतरता की स्वीकृति

3 अनुक्रम विधि में तद्रुप क्रिया, तदाकार प्रमाण ही अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन
तदाकार – सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण स्वरूप में मानव स्वयं होना जागृति है।
तद्रुप – ज्ञान अनुभव सम्पन्नता ही दृष्टा पद है।

अनुक्रम 1. सहअस्तित्व में, से, के लिए क्रम, प्रमाण क्रिया
2. विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और सहअस्तित्व सम्पूर्ण स्थिति, गति और क्रिया है। यही अनुभव है।

पेज नं. 46

भास, आभास, प्रतीति, अनुभव

मानव व्यवहार दर्शन

34 भाषा के मूल में भाव;
भाव के मूल में मौलिकता;
मौलिकता के मूल में मूल्यांकन;
मूल्यांकन के मूल में दर्शन;
दर्शन के मूल में दर्शक;
दर्शक के मूल में क्षमता, योग्यता एवं पात्रता;
क्षमता, योग्यता एवं पात्रता के मूल में सत्य भास, आभास, प्रतीति;

भास, आभास, प्रतीति के मूल में भाषा है।
यह सब चित की क्रिया है जो दर्शक के जागृति के अनुसार सफल है अथवा असफल है।

46 बोधः- बुद्धि में अनुभव बोध वं चित में अनुभव प्रतीति है।
प्रतीति, आभास, भासः-
प्रतीति, आभास, भासः-

- सह अस्तित्व सहज अनुभव आत्मा में होता है।
- जिसका अनुभवमूलक विधि से बोध बुद्धि में होता है।
- बुद्धि और चित के योग में अनुभव की प्रतीति, होती है, यही अनुभव का चिन्तन है।
- चित और वृत्ति के योग में अनुभव का आभास होता है। जो स्वयं न्याय, धर्म, सत्य रूप में तुलन क्रिया है।
- वृत्ति और मन के योग में अनुभव का भास होता है। जो मूल्यों का आस्वादन और संबंधो का चयन रुप में प्रमाणित हो जाता है।

60 अध्ययन विधि से सहअस्तित्व रुपी सत्य सहज मन में
पुष्टि मनन (स्वीकारने के रूप में)
वृत्ति में पुष्टि तुलन (गुणात्मक विधि से),
चित में पुष्टि साक्षात्कार,
बुद्धि में पुष्टि बोध संज्ञा है।

60 स्फुरण, प्रेरणा तथा क्रांति के भेद से मनन,
संतुलन अथवा असंतुलन के भेद से तुलन,
अर्थपूर्ण अथवा आरोप के भेद से चित्रण तथा
अनुभवमूलक विधि से सत्यबोध है।

64 सीमित अर्थ......
सुख और दुःख का मन, वृत्ति में भास
सुख और दुःख वृत्ति, चित में आभास होता है।
सुख की निरन्तरता में चित्त, बुद्धि में प्रतीति
सुख की निरन्तरता में आत्मा में अनुभूति होना पाया जाता है, जिसकी निरन्तरता होती है।

मानव अनुभव दर्शन

15 सत्यानुभूत आत्मा में अनुभव, बोध बुद्धि में,
अनुभव बोध सहज प्रतीति चित्त में,
अनुभव सहज चिंतन का आभास वृत्ति में, एवं भास मन में होता है।

15 अध्ययन क्रम में अनुभव क्षमता की आंशिकता में बोध,
बोध, की आंशिकता में प्रतीति,
प्रतीति की आंशिकता में आभास एवं

आभास की आंशिकता में भास क्षमता प्रसिद्ध है, जो साक्ष्य में प्रत्यक्ष होने वाली संज्ञानीय क्रियायें है।

19 ब्रह्म सहज वर्णन पारगामी, व्यापक और पारदर्शीयता के रूप में है। यह केवल भास, आभास, बोध तथा अनुभवगम्य है। इसका बोध मानव की क्षमता, योग्यता, पात्रता पर आधारित है।

23 संकेत ग्रहण प्रक्रिया बद्ध ज्ञान, प्राप्य को पाने, उसे सुरक्षित रखने के कार्यक्रम में अभिव्यक्त है। प्राप्त के अनुभव के क्रम में भास-आभास एवं प्रतीति ही ज्ञापक (सत्यापित होना) है।

31 सुख के भास-आभास का कारण ही है उसकी निरंतरता के लिए जिज्ञासा।

31 प्रत्येक आवश्यकीय आस्वादन से जड पक्ष की पुष्टि होती है। चैतन्य पक्ष के मन को सुख या दु:ख भी भास सकता है।

44 अस्तित्व पूर्ण सत्ता में पकृति की स्वीकृति = सत्याभास
अस्तित्व की आंशिकता की स्पष्ट स्वीकृति = आभास
अस्तित्व स्पष्टता तथा प्रयोजन सहित स्वीकृति = प्रतीति
अस्तित्व संपूर्णता में, से, के लिए पूर्ण स्वीकृति = अनुभव

मानव कर्म दर्शन

11 सत्य प्रतीति व अनुभूति में ही मानवीयता पूर्ण आचरण एवं न्यायपूर्वक व्यवहार में निष्ठा पाई जाती है।

मानव अभ्यास दर्शन

3 व्यंजनीयता ही भास आभास एवं प्रतीति है।

8 अवसर का भास, आभास, या प्रतीति होना मानव में पाये जाने वाले स्वभाव की प्रक्रिया है, जो जागृति की गरिमा है, क्योंकि उनमें अनुभव से अश्विक उदय होना पाया जाता है। यही अनुमान भास, आभास एवं प्रतीति है। ये सत चैतन्य क्रिया की सीमा में सम्पन्न होते है।

10 सामान्यतः अनुमान ही भास, आभास एवं प्रतीति के रूप में साम्यतः पाया जाता है।

मानवीय संविधान सूत्र व्याख्याः

76 भाषा विधि

77

भाषाः भास= परम सत्य रुपी सहअस्तित्व कल्पना में होना, वायन व क्षवण भाषा के अर्थ रूप में सत्य स्वीकार होना

आभासः भाषा सहित अर्थ कल्पना अस्तित्व में वस्तु रुप में स्वीकार होना, अर्थ संगति होने के लिए तर्क का प्रयोग होना,
अर्थ वस्तु के रुप में अस्तित्व में स्पष्ट तथा स्वीकार होना फलस्वरूप तर्क संगत होना।

प्रतीतिः तर्क संगत विधि से सहअस्तित्व रुपी वस्तु बोध होना। अर्थ अस्तित्व में वस्तु के रुप में समझ में आना ही प्रतीति है। फलतः बोध व अनुभव पूर्वक प्रमाण चिंतन साक्षात्कार प्रणाली से अभिव्यक्ति होना सहज है।

तर्कः अपेक्षा एवं संभावना के बीच सेतु तात्विकता प्रमाण समाधान, आवश्यकता, उपयोगिता, प्रयोजनशीलता के आधार पर सार्थक होता है। संपूर्ण संभावनाएं यथार्थता, सत्यता, वास्तविकता सहज प्रमाण है।

उफ्निऱ

रीपषश्र्षऽीलनसघ’348

ऐन्द्रिय (भोतिक), बौधिक (वैचारिक) एवं आध्यात्मिक अनुभूति भेद से तृप्ति अथवा सुख है।
22

ऑफ्निऱ	मॐद्दिग	ईप्ऱीदि्ंरग
ऴप्त) श्नऴक्षहुन) मश) कथॅद्त्रिर्भो द्धम़ ऒष़म) दित्ऱ) फभ) बेणद्दि शॅ षॉदॅ ऴरा शफा ढुध्धिभ़ ऎॆद्त्रिओषॆचॉ	**ळिढॅ्वड़) नद्रिॅवड़) रॉऒवड़ ढण़ शब़थ़द शॅ ध्ऱध्ढढुध्धि**	**ह़द़दर्फ़िढिढण़नीडक्किऴ्ब**

श़बभिओषॉढाषे	**तर्खिंक्ष ओ़रिद, तर्खिंक्ष नझ़मड़बा**	**:नझ़मड़बा,दिढ्भ ऒढ्बपॉथ,:दफ़िळपॉथ) :नझ़मड़बा**

उज्झीपृीलन्नषिदऽ्पषॉ्पीऴॅइइॊॅग्उफ्नि्रॢीश्रॊॆ

23 प्रिय विषय प्राप्त होने पर इन्द्रिय तृप्ति होती है। अप्रिय विषय प्राप्त होने पर इन्द्रियाँ तृप्त नहीं होती है।

इच्छानुसार द्रवित होने वाले और चेष्टा करने वाले अंग की **इन्द्रिय** संज्ञा है, जिन को शब्द, स्पर्श रुप, रस और गंधेन्द्रियों के नाम से जाना जाता है।

ऱूष्टिऱी:
रीपषश्र्षऽीलनसघ
23

प्रियाप्रिय	हिताहित	लाभालाभ
विषय सापेक्ष	शरीर सापेक्ष	वस्तु व सेवा सापेक्ष
न्यायान्याय	धर्माधर्म	सत्यासत्य
व्यवहार सापेक्ष	समाधान सापेक्ष	अस्तित्व में अनुभव सापेक्ष

मानवीय दृष्टिः न्याय, धर्म, सत्य

देव मानव दृष्टिः धर्मपश्चान न्याय और सत्य
दिव्य मानव दृष्टिः सह अस्तित्वरुपी परम सत्य

68 मानव में इधक्धीगीर के प्रलोभन से ही ब्रिरीब्रिर/ऽिदीऽिददधीळीयीळीय दृष्टियाँ क्रियाशील है, साथ ही ऩरक्धीर्् के संकल्पो से फ्रीरीफ्रीर/ऩरीक्रक्धीद्रीद्र दृष्टियाँ क्रियाशील है।

103 बदलने वाली दृष्टि की इपिद्ररूष्ठि संज्ञा है। ये ब्रिरीब्रिर/ऽिदीऽिदषळीयीळीय दृष्टियाँ है। न बदलतने वाली दृष्टि की पिद्ररूष्ठि संज्ञा है। ये फ्रीर/ऩरक्षद्ररूष्ठिरीःहै।

रीपषगरक्सघ

11 ब्रिरीब्रिर/ऽिदीऽिद/ळीयीळीय दृष्टियाँ भौतिक व्यवसाय तथा उसके उपयोग में प्रयुक्त हुई है जो जीवचेतनापूर्वक जीते हुए मानव में है।
फ्रीरीफ्रीर/ऩरीक्रक्षद्रीद्र दृष्टियाँ जागृत मानव परंपरा में व्यवहार तथा आचरण में निर्णायक सिद्धि हुई हैं।

ईसी/षिजील/उज्झी/ऍदन्यली/ख्येब

षिजील

रीपषश्र्षऽीलनसघ

26 षिजील0 प्रियाप्रिय, हिताहित, लाभालाभ, न्यायान्याय, धर्माधर्म तथा सत्यासत्य तुलनात्मक वृत्ति की क्रिया के फलस्वरुप निश्चित विश्लेषण ही विचार है।

29 विचार- विश्लेषण पूर्वक किया गया स्वीकृतियाँ जो समाधान के अर्थ में प्रयोजन है।

33 शरीर की नश्वरता और जीवन की अमरत्व व निरंतरता, कार्य व्यवहार के नियमों की पूर्ण स्वीकृति व अनुभूति ही निर्बिज विचार है और....

35 आशाएं आस्वादन के रूप मे विचार प्रसारण के रुप में; तथा ऋतम्भरा द्रढता एवम् निष्ठा के रूप में व्यक्त है...

56 क्रिया की पृष्टभूमि विचार ही है (कर्म एवं फल)
76 विचार मात्र समाधान से नियंत्रित है, जो जागृति का प्रमाण है।
76 जागृत मानव में न्यायपूर्ण व्यवहार तथा समाधान पूर्ण विचारों को पाया जाता है।
78 असंग्रह समाधान – समृद्धि, स्नेह, विद्या, निराभिमानता (सरलता) अभय एवं वाणी संयम से युक्त विचार से षोजीलिगक्षषङॅंऱदीगीं/
स्वनारी/स्वपुरुष तथा स्वधन एवं दयापूर्ण व्यवहार से श्र्षऽीलिग॒घ अथवा व्यवहारिक स्वर्गीयता की उपलब्धियाँ है।

88 मानव कोटि तक ऐसी कोई ईकाई नहीं है........
मात्र विचार ही सत्यपूर्ण होने पर स्वतंत्र है, अन्यथा वह भी आसक्ति ही है। स्वतंत्र विचार परस्पर पूरक और उपयोगी सिद्ध है ही

98 विचार के अभाव में रति क्रिया सिद्ध नहीं है।
112 पवित्र विचार ही मनोबल तथा सहअस्तित्व ही पवित्र विचार है।
115 विचार पक्ष का परिमार्जन मात्र चित के प्रत्यावर्तन से ही संभव है
147 ज्ञान का उदघाटन चैतन्य पक्ष अथवा विचारों द्वारा ही होता है।
147 विचार पक्ष संस्कारों के आधार पर ह्रास और जागृति की ओर गतित है।
154 मानव को विचार के अभाव में किसी भी सम-विषमात्मक क्रिया सम्भावना नहीं है।

रीपषइपृयषनसघ

97 अनुभव मूलक षिजील ही व्यवहार में न्याय सहअस्तित्व तथा व्यवसाय में समृद्धि है।

रीपषगर**क्सघ**

10 जिद्रथषषिजील ही क्रमशः कला एवं उपादेयता को प्रकट करता है।
षिजीलृक्षोील से सम्बद्ध रहना ही जागृति है।
11 बौद्धिक क्षमता के नियंत्रण में भौतिकता है क्योंकि षिजीलगॅइयीषर्रें उत्पादन व व्यवहार सिद्ध नहीं होता है।
16 षिषॉबृथक्षिजील, उपासना-इच्छा सहित किया गया प्रत्येक कर्म सभी स्तर पर श्रेयस्कर होता है।
19 दृष्टा पद ही दर्शन क्षमता का प्रतिरुप है और व्यवहार उसके अनुरुप है जो प्रसिद्ध है। षिजील गॅइयीषर्रें शरीर द्वारा कोई कार्य-व्यवहार सिद्ध नहीं होता या प्रत्यक्ष नहीं होता। इससे स्प,ट हो जाता है कि शरीर ध्वारा किए जाने वाले संपूर्ण क्रिया कलायों के मूल में षिजीलऽ॒ऽॅं सलूलषिजीलपऽींऽॅं यह विचार को प्रसारित करने का माध्यम है। इस निष्कर्ष से षिजील/ सलूल़ॅइदिलिछ्य है और यह चैतन्य क्रिया है।

19 षोजीलिर्गरदीरीपषगींबीऱ्क्षिधदिऱ्रेंक्षिधदऽॅं
44 दयापूर्ण विचार निरन्तरता से कार्पण्य दोष का निवारण होता है, परम आल्हाद का अनुभव होता है।
44 बलऽिदजिफ्दप से उत्साह व आल्हाद की वृद्धि होती है।
46 काल, क्रिया की अवधि है। इसी अवधि में आरोपित विचार व इच्छा ही असहज एवं निरारोपित विचार व इच्छा ही सहज है।

रीपषइय्ऱीनसपकअ

3 षिजीलगॅ अभाव में उत्पादन व व्यवहार शरीर द्वारा संपन्न नहीं होता है।

7 सामाजिकता से सम्पन्न.... षिजीलूरी में ही मानव स्वतंत्रता एवं परतंत्रता का अनुभव करता है, क्योंकि जागृत मानव का मूल मूर्त रुप ईसी/षिजील/इच्छा, संपक्प एवं अनुभूति और प्रमाण ही है।

9 मानव में संस्कार ही षिजीलऑषइीजलथऽ/ यही सम्यकता के लिए अपेक्षा है।

19 विचार विहीन मानव नहीं है। विचार के अभाव में प्रमाण सिद्ध नहीं है। रीपषगीरृऴदुबषिजील ऽॅ

31 षिजीलऽ्रूृव्ऱनसर्परदीऽॅ

41 प्रेम प्रतिष्ठा ही सतर्कता, परमानन्द प्रतिष्ठा ही सजगता है। षॅद्धिषजिद्धगींऑगृद्रदीर्ऱेंरीऩीप/ जिद्धषमृद्दिगींऑगृद्रदीर्रेंब्रऍ/
मृद्दिषईद्रीगींऑगृद्रदीर्रेंबलरीपफ्नब्रदिह्लीबीरूजीदूऽॅ
जो क्रम से ब्रदूदि/इषऩीलथीऑषझृयषऽॅ यही जागृत मानव में, से, के लिए सहज प्रतिष्टा है।

रीपषूऱ्षिनीपृद्रश्चीघ्री

षिजीलअ0 क्रियान्वयन में तर्क संगत निश्चयनों की स्वीकृति
+बॅह्लपऊॅ11111111<3,

ईसी
रीपषश्र्षऽीलनसघ

29	आशाः आश्रयपूर्वक की गयी अपेक्षा की आशा संज्ञा है। शरीर के आश्रय पद्धति से और अनुभव के आश्रय पद्धति से आशयों का होना पाया जाता है।
25	आशाएँ आस्वादन के रूप मेः.........
67	आशाएँ भ्रममुक्तिपूर्वक सार्वभौम व्यवस्था, अर्थ एवम् काम के रुप में प्रलोभन.......
67	मानव में आशाएँ अमानवीय, मानवीय व अतिमानवीय अवस्था भेद से है।

उज्झी

रीपषश्चषऽीलनसघ

29 उज्झी' आकार-प्रकार, प्रयोजन एवं संभावना का चित्र ग्रहण एवं निर्माण करने तथा गुणो का गतिपूर्वक नियोजन करनेवाली क्रिया की इच्छा संज्ञा हैष जीवन शक्तियाँ गुण, स्वभाव, धर्म (समाधान) के रुप में व्याख्यायित होती है।

35 इच्छाएँ (कांक्षाएं) प्रयोग एवं व्यवहार के रुप में...

68 जिसकी पूर्ति नहीं है, जो पूर्ण नहीं है, उसकी पूर्ति के प्रति और पूर्णता के प्रति जो हठवादी उज्झीऑऽोउसकी +रॅङदॅह्थी, तथा भ्रान्ति संज्ञा है, जो बन्धन है।

रीपष इपृयषनसघ

27 मन, वृत्ति, चित्त और बुद्धि के क्रमानुवर्ती संवेगो के मूल में पायी जाने वाली उज्झीअें में अपेक्षाकृत तीव्र इच्छाएँ अर्जित स्वभाव है। जो प्रत्यक्ष रुप में विद्यमान रहते हैं।

ॠक़्रऑषशीलथग्डिगींउज्झीऑ**ध्रघ्ङद्दह्नुनर्बेःऴ्शणढमषढाषॄ्रेभषशश्ओ़मॉर्बेऩभ़च़दॅऴर शस्बिफ़कषॄ्रेसंपूर्ण इच्छाएँशश्ओ़मकढएॅळद्ळष़मकढह्नुनर्बेश़्शणढषेचॉध्रब़डिढषॄ्रे**

27 दूष्रउज्झी को मनाकर व मनः स्वस्थता का रुप प्रदान करने के लिए मानव इकाई तन, मन, धन का नियोजन करती है।

षॉङ दूष्र/ रफ्न खलॄ क़्र भेद में दृष्टव्य है जो क्रम से दूष्र उज्झी/ गीलथ खलॄ क़्र उज्झीअें पर आधारित है।

उज्झीङदिमलीमल़**षॉङ**ऽोे

रीपष गर**क्स**घ

2 दर्शन पूर्वक आवश्यकताओं का निर्धारण एवं अनुसरण करने की स्वीकृति के लिए की गयी सम्पूर्ण क्रियाएं उज्झीगॅदुबर्रेहोती है जो चैतन्य क्रिया में पाये जाने वाले संचेतना का प्रगटन है।

2 प्रत्येक इच्छा व आवश्यकता की पूर्ति से मानव सुखी होने की कामना करता है।

3 सम्पूर्ण कर्मो का फल........

इच्छा के बिना कर्म नहीं है। मानव में उज्झीऑदूष्र/गीलथऑषॄक़्रेरयम्ॅज्ञातव्य है।

दूष्रउज्झी क्रिया के रुप में अवतरित होती है।

गीलथउज्झीऑ/**श**क्रिया के रुप में अल्य संभाव्य है।

ॠक़्रउज्झीऑःक्रिया की रुप में अत्याल्य संभाव्य है।

दूष्रउज्झीऑःजिस के बीना जीना नहीं होता।

गीलथउज्झीऑःमानव में सत्य कोई वस्तु है, जैसा. द्ऱ/ ऩर/क्फ़्रीऱ/ **ओॉआळश्ढषिचिशओॉ ध्रब़डिढओमदॅऔरिएॅओॉआश्नश्लळिघ़मदषदूमषढ़षॄ्रे**

ॠक़्रउज्झीऑः मानव में सत्य कोई वस्तु है, जैसा. द्ऱ/ ऩर/क्फ़्रीऱ/ कोई वस्तु है, जिसको प्रमाणित करने के लिए कोई स्पष्ट विचार नहीं रहता है।

5 समस्त इच्छाओं के सात भेद हैः-

ऱ्गॅऴिऑइध/इध**ॅ**ऴिऑर् जो क्रमशः उत्तमोत्तम अधमाधम है।

ऩर**ॅ**ऴिऑइध/इध**ॅ**ऴिऑऩर**क**ो क्रमशः मध्योत्तम अधम है।

गीरगॅऴिऑइध/इध**ॅ**ऴिऑगीर जो क्रमश उत्तम अधम मध्यम है एवं

इध**ॅ**ऴिऑइध**क**ो मध्यम है

2 उज्झीयॉ़ से अन्वेषण,
अन्वेषण भेद से गम्यता,
गम्यता भेद से अनुभव,
अनुभव भेद से मूल्य,
मूल्य भेद से सामाजिकता एवं
सार्वभौम व्यवस्था है।

रीपषइय्ऱ्ीनसघ

44 दूप्रऊज्झीS़ मीपऱदीSॊb इच्छा के कार्य रुप में परिवर्तित होने की जो संक्रमण स्थिति है वही कटाह स्थिति है। संयमता केवल मानवीयता की सीमा में स्पष्ट है।
बॄॊथक्ज्झीऑॅऌ्रेऱ्र्रें/ग़ॉळिऑSूSॊb
रृव्ऱ्र्रें/ग़ॉळिऑबृथदीग़ॅसोयर्दऊज्झीऄ्ंगीब्ऱषSॊb

ऍदऱ्यली़'घॊब
रीपषश्ऱ्षSीलनसघ

/6 ऍदऱ्यली सत्य सहज वैभव की अभिव्यक्ति करने की संपूर्ण पृष्ठभूमि/ सत्य से परिपूर्ण संकल्प।
घॊब0 सम्यक प्रकार से की गयी स्वीकृति (जिस को स्वीकार करना है उसकी निर्भमता) को निरंतरता प्रदान करने वाली बौधिक क्रिया।

35 ऋतम्भरा दृढता एवं निष्ठा के रुप में व्यक्त है।

सलूल+ ञूषप
रॅस़्

रीपषसलूल0ञूषपग़ॅर्ौदगीईनीपब्रनीप
रीपषश्र्षडीलनसघ

29 **ब़दळर्बेपोथिओढण़फोढिओतॉदॅनस़ॅोओ़शब्बिरिढहूनद्दळष़मर्बेऩभ़चढ़षेढण़ळमामऔ द्धम़ शब्नद्द औ चद़ॅ ऴरा शफा स़्िभ़ऑं बें भष तॉर्दो :ण़्ध्यपोथिओ ऑम फोढिओ स़्िभ़ऍ शब्बिरिढऩआच़ढाषे**

- **फोढिओनस़शॅढ़ढ्नभक्ष्मामढण़इशऔद्धम़औकआइढ्ऩतदस़्िभ़ऍषे पोद्धिओनस़ शॅ ढ़ढ्नभक्ष्ओऴ) ळिघ़म) अघ्ङ़) उढब्फम़ ळ ध्ऱब़डिओढ़) हृद) ळिळॅओ) ळिहृद ऍॅळ अशशॅशपथिढध्रस़्िभ़षे**

67 **बॅथश } घेढद्भ अओ़आ औ अघ्ङ़ऑं ऍॅळ ॲओ़स़ऑं औ शऔढ ऑ क्रषड ओमदॅ भॉक्भ स़बढ़)भॉक्भढ़ओमऩद्र्ढ़शषिढशध्ऱडःकषाबॅथशषे)चिशऔःनश़्शणढिश़ब्भढॅब़दळऔ ऴिमॉफ़कर्बेऩआच़ढाषे**

- **'चाळद नघ़्शिण' ॲऴ) ळिघ़म) अघ्ङ़ उढब्फम़ ढण़ ध्रब़डिओढ़ #ध्रब़ड% ओ़ ध्रश़मड #शऔढक्रषड%बॅथशनमषाषे)चिशऔःदद्ढमषाहृदऴतऍऴिस्िभ़ऴतध्रिस़्िभ़ऍषम ब़दळऴमामर्बेऩआच़ढाषेचॉब़दळनमनम़र्बेनम़ळर्द्धिर्षीढ़षे**

ध्रश़मडॅ* ॲऴ)ळिघ़म)अघ्ङ़)उढब्फम़ऍॅळध्रब़डिओढ़शषचध्रब़र्डोऔशऔढशॅबॅथशढद्र नम ध्रफ़ळ ट़रदॅ षॅढध्रिभस़्िें ढमक औ ध्रश़मड #शऔढ क्रषड% शहृ षे) चिशर्बे ध्रढ्भ़ऴ ओ़ षॉद़ॲळळभओषे

38 **हृद़ळश्ण़ औ घेढद्भ अओ़आ ओ़ चट ऴमाम ध्रढ्भ़ऴ औ ऩर ओ ऴप्त) श्नऴ्क्षहून) मश) कथॅदि्त्रर्भोद्धम़ऩभॅच़दॅऴरॅध्रळुद्धिर्भोर्बेभॅनश्लिनस़ओक्रषडओमढ़षे**

- **अद ध्रळुद्धिर्भोर्बेचॉओऱ ओम हृदनस़ षे) इशओ़ ॲश्ऴतद शध्रौ औ हूनर्बे घेढद्भ नस़ षा ओमढ़षे**

15 **:दफ्रिळ)ध्रब़ड)पॉथऔशध्रॅवडबॅथशढद्र औब़थ्भशॅषॉढ़षेभषब़दळनमनम़र्बेषाषॉढ़षे**

97 मेधस पर कंपन-प्रदत्त तरंग से ज्ञान का उद्घाटन ज्ञानेन्द्रियों द्वारा होता है। जीवन द्वारा संकेत रूपी गति-प्रदत्त तरंग से संवेदनशीलता और संज्ञानशीलताएँ व्यवहार में स्पष्ट होते है ।

97 प्राण और मन के संयुक्त (विवशतापूर्ण आघात्) प्रेरणा रूपी कंपन से संवेग है, अथवा इसे ऐसा कमझें कि संवेग मन के प्रभाव से संपन्न प्राणवायु-तरंग है, जिससे इन्द्रिय-ज्ञान या क्रियाएँ संपन्न होती है ।

99 हृदय और पांच इन्द्रियों से संबंधित विषयों के प्रति जो आसक्ति या अनासक्ति है, उसी के आधार पर ही मानव जीवन की जागृत अवस्था का निर्णय है ।

99 प्राण का विषय हृदय, हृदय का विषय इन्द्रिय तथा इन्द्रिय का विषय व्यवहार (कर्म) व भोग है । प्राण, हृदय को; हृदय, इन्द्रियों को; इन्द्रियाँ, व्यवहा व भोग को प्रेरित करते है ।

100 स्थील पिण्ड का योग सूक्ष्म से प्राण के द्वारा है। सूक्ष्म एवं कारण शरीर का योग चित्त के द्वारा है। कारण एवं सूक्ष्म शरीर (क्रिया) अविभाज्य है।

105 व्यवहारः....... मन ही मेधस पर प्रभावपूर्वक आशानुरुप आकार का संकेत करता है तथा बदले में सुखास्वादन चाहता है।

159 संवेदन, संवहन......
षॅॉपी’ पाँयो ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों का ज्ञान अथवा विकास के प्रति प्रवृत्ति

164 चारों विषय इंद्रिय तृप्ति से सीमित है। स्थूल शरीर मात्र की मृत्यु निश्चित है इसलिए विषयों से प्राप्त सुख की निरंतरता नहीं है।

रीपष इपृयषनसघ’5347

8 इन्द्रियों द्वारा संपन्न पंच क्रियाकलाप भी चैतन्य के ही है। चैतन्य के अभाव में इन्द्रिय व्यापार नहीं है।

10 शरीरमूलक आस्वादन में सुख मात्र भासता है, उसकी निरंतरता नहीं है। अनुभव मूलक विधि से सुख, शान्ति, संतोष, आनंद सहज निरंतरता है।

23 शरीर के द्वारा व्यवहार,
हृदय के द्वारा शरीर,
प्राण के द्वारा हृदय और
मन के द्वारा प्राण का संचालन प्रसिद्धि है।

24 मन का संकेत संवेग के रुप में है।
वह प्राण के द्वारा मेधस पर प्रसारित होता है।
मेधस से तरंग में अनुवर्तित होकर शरीर का क्रिया व्यापार में रत होने के लिए बाध्य कर देता है।
बाह्य प्रकृति के संकेत इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किए जाते है। यह परानुक्रम संकेत ग्रहण प्रक्रिया है।

24 आशा और विचारों के स्पंदन के अनुरुप प्राणो द्दीपन और प्राणोदीपन के अनुरुप आशा और विचारों का स्पंदन प्रसिद्ध है। यही प्रक्रिया काम, क्रोध, भय, भ्रांति, मोह, शोकादि कलेश परिपाक की क्रियाओं में स्पष्टतया परिलक्षित होती है।

35 सूक्ष्म शरीर जिस आकार-प्रकार वाले शरीर को माध्यम बनाकर आस्वादन क्रिया में रत रहता है, सदैव उससे अधिक आस्वादन सुख ले सकने की कल्पना करता है।
इसी क्रम में मानव शरीर का प्रादुर्भाव हुआ है।-------

प्राणयुक्त कोशिकायें जो मानव शरीर की रचना में व्यस्त एवं क्रियाशील है, सूक्ष्म शरीर के निर्देशानुसार आकार प्रदान करने के लिए प्रयासरत है।

रीपषगरक्सघ

33 स्थूल शरीर प्राण वायु से,
सूक्ष्म क्रिया चित्त से नियंत्रित पाई जाती है।
सूक्ष्म और कारण का वियोग नहीं है, यही अमरत्व का साक्षी है। सूक्ष्म और कारण का संकेत केवल स्थूल शरीर को संचालित करने में स्पष्ट होता है, साथ ही यह अनिवार्य भी है। स्थूल शरीर रहित अवस्था में बृद्धि के संकेतानुसार ही सूक्ष्म क्रिया में सम्पन्न होती है।

50 शरीर से सम्पन्न होने वाले समस्त क्रियाओं का संचालन मन ही मेधस द्वारा करता है। मेधस से सभी नाडियाँ नियंत्रित हैं।
शब्द का मूल रुप मन ही है। मेधस पर मन आस्वादन एवं स्वागत भावपूर्ण तरंगो का प्रसारण, संचालन नियंत्रण करता है उसके मूल में शब्द ही है।

51 शरीरमय जीवन के लिये मानवेतर प्राणियों की तथा मनोमय, बुद्धिमय और आत्ममय जीवन के लिये मानव मात्र की सृष्टि है।

रीऩीपीद्रगयॲदिगषीन
बॅ्ह्णपड़546

रीपष़ऑद्दपीषीनीरप्षि्रीप

16 अस्तित्व में मानव एक---------
ऐसा जीवन शरीर को जीवन्त रखते हुए, जागृत जीवन सहज आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा, और प्रामाणिकता के आधार पर संचालित होना पाया जाता है। शरीर संवेदना के क्रिया-कलाप, जीवंतता के आधार पर ही पांच ज्ञानेन्द्रियों का कार्य संपादित ही पाता है। कर्मेन्द्रियों का क्रियाकलाप, जीवन्नता स्पष्ट न करते हुए भी कुठ क्षण, कुछ दिन, कुछ मास और वर्ष तक भी पराधीनता विधि से सप्राणित रह सकता है अर्थात् श्वास और हृदय क्रिया चल सकती है। इस अवस्था में मनुष्य सहज परिभाषा का कार्यकलाप नहीं हो पाता, इसका प्रमाण कई लोग देख चुके है। अस्तु, शरीर संप्राणित रहना भी आवश्यक है। पर उपर स्पष्ट किए गए विश्लेषण से निश्चित होता है। जीवन्तता, जीवन का ऐश्वर्य है। श्वास लेने-छोडने की प्रक्रिया प्राण कोशाओं से रचित शरीर रचना की महिमा है।